शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०-पत्र

'निर्मला' उपन्यास

लेखक - मुंशी प्रेमचन्द

प्रमुख अवतरणों की ससंदर्भ व्याख्या -

" वह अपना रूप और यौवन उन्हें न दिखाना चाहती थी, क्योंकि वह देखने वाली आँखें न थी। वह उन्हें इन रसों का आस्वादन करने के योग्य ही न समझती थी। कली प्रभात-समीर ही के स्पर्श से खिलती है। दोनों में समान सारल्य है। निर्मला के लिए वह प्रभातसमीर कहाँ था।"

उत्तर :-

सन्दर्भ- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'निर्मला' उपन्यास से ली गई है। इसके लेखक हिन्दी के महान उपन्यासकार मुंशी प्रेमचन्द जी हैं। प्रस्तुत व्याख्या में प्रेमचन्द वृद्ध मुंशी तोताराम से विवाह हो जाने के पश्चात निर्मला की मनःस्थिति का वर्णन कर रहे हैं। मुंशी तोताराम निर्मला के साथ बहुत मधुर व्यवहार करते थे। वह भी उनसे मधुर व्यवहार करने लगी थी। वह उनसे शारीरिक सम्बन्ध की इच्छा न रखकर उनके प्रति पिता की श्रद्धा रखती थी क्योंकि वे उसके पिता के उम्र के थे। मुंशी तोताराम की सज-धज का नाटक उसे असहनीय हो उठता था।

निर्मला में युवतियों की उमंग थी। वह साज-श्रृंगार करती और चाहती थी कि उनके यौवन की प्रशंसा हो। परन्तु उसके समक्ष पति रूप में वृद्ध मुंशी तोताराम थे। आयु का यह अन्तर उसे यौवन का प्रदर्शन करने से रोक देता था। वह चाहती थी कि कोई समवय का युवक उसके सामने हो। जिस प्रकार कली प्रातः समीर के स्पर्श से ही खिलती है, उसी प्रकार निर्मला भी समवय युवक के सामने खिल

शेष आगे-

सकती थी। परन्तु वृद्ध तोताराम की पत्नी के रूप में उसकी सारी उमंगें दब जाती थी। वह तोताराम को मन में पति स्वीकार करने में विवश थी।

डॉ० देवचरण प्रसाद 22/08/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महावि० सुरवसेना, प्रतीपिया

2020 वर्षीय परीक्षार्थियों के लिए राष्ट्रभाषा हिन्दी
पुस्तक का नाम - 'पथिक' अ०हि०-पत्र
कवि - श्री राम नरेश त्रिपाठी
शास्त्री द्वितीय खण्ड

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर -

प्रश्न :- विरहिणी पथिक-प्रिया अंतिम इच्छा क्या है?

उत्तर पथिक-प्रिया विरह की अग्नि में जल रही है। वह कहती है कि यदि वह घास होती तो उसके पति उस पर पैर रखकर चलते। वह भगवान से प्रार्थना करती है कि वह उसके प्रियतम के पद के धूली बना दें, क्योंकि उसका प्रियतम ही उसके जीवन का आराध्य है। वही उसके मन का आनन्द है, वही उसकी आत्मा की शान्ति है और वही उसका जीवन है। इसलिए ईश्वर से वह प्रार्थना करती है कि मेरी अंतिम इच्छा पूरा करवा दें। उनका दर्शन एक बार अवश्य करवा दें।

प्रश्न :- कवि ने व्यक्तित्व को ऊपर उठाने के लिए क्या माँग की है?

उत्तर :- कवि अपने काव्य 'पथिक' में व्यक्तित्व को ऊपर उठाने के लिए एक बड़ी ही महत्वपूर्ण बात की माँग की है, जिसका दिनानुदिन अभाव होता जा रहा है। कवि कहता है कि आधे दिन दुनिया से वास्तविकता का भाव दूर होता जा रहा है। सारी दुनिया बिना सोचे-समझे उग्रवादियों के गिरोह में सम्मिलित होती जा रही है। गाँधीवाद साम्यवाद को खुलकर चुनौती दे रहा है। पथिक का कवि गाँधीवादी है और गाँधीवाद में ईश्वर की अलौकिक सत्ता को सिर झुकाकर स्वीकार किया गया है। त्रिपाठी जी ने भी इस काव्य में आस्तिकता पर बल देते हुए बतलाते हैं कि परमपिता परमेश्वर की इच्छा से ही इस संसार की रचना हुई है। ईश्वर की कृपा से ही पृथ्वी का उद्भव, पालन और प्रलय होता है। अतः उस अलौकिक सत्ता को स्वीकार करना चाहिए।

प्रश्न :- ईश्वर की शक्ति को निराधार बताने का परिणाम क्या होता है?

शेष आगे-

मुझे साधु-संतों ने बताया है कि कौशलपुर राजा ही आपकी दीनता को दूर कर सकते हैं। यह सब जानकर कि आप ही राजा दशरथ के पुत्र हैं, जो मेरी पीड़ा को दूर कर सकते हैं। इसलिए मैं कृपानिधान के पास आया हूँ। हे गरीबों पर दया करने वाले श्री राम मैं जन्मजात भूखा और भिखारी हूँ। आप ही में वह सामर्थ्य है कि मुझे भर पेट भोजन दे सकते हैं। अतः आपसे प्रार्थना है कि तुलसीदास को भक्ति रूपी सुधा तुल्य अन्न से भर पेट भोजन कराइए, जिससे की मेरी जन्म-जन्मान्तरों की भूख मिट जाय। इस पद में गोस्वामी तुलसीदास जी अपने को भक्ति के भूखे भिखारी के रूप में भगवान श्रीराम के द्वार पर खड़ा कर उनसे भक्ति रूपी भोजन की याचना करते हैं।

डॉ० देवचरण प्रसाद 22-09-20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०कृ०सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

उपशास्त्री — हिगंत-भाग-2 - काव्य खण्ड
शीर्षक — पद-2 राष्ट्रभाषा हिन्दी, अर्द्ध०-पत्र
कवि — गोस्वामी तुलसीदास

भावार्थ

द्वार हौं भोर ही को आजु।
रटत रिरिहा आरि और न, कौर ही तें काजु॥
कलि कराल दुकाल दारुन, सब कुभाँति कुसाजु।
नीच जन, मन ऊँच, जैसी कोढ़ में की खाजु॥
— — — — — — — — — —
— — — — — — — — — —
— — — — — — — — — —
जनम को भूखो भिखारी हौं गरीबनिवाजु।
पेट भरि तुलसिहि जेंवाइय भगति-सुधा सुनाजु॥

भावार्थ:- प्रस्तुत पद में गोस्वामी तुलसीदासजी भगवान श्रीराम के राजभवन के द्वार पर पहुँचकर अपनी व्यथा निवेदित करते हुए उनसे भीख की याचना करते हैं। वे कहते हैं कि हे प्रभु! आज मैं सुबह-सुबह आपके द्वार पर आकर खड़ा हूँ। मैं भूखा हूँ। दो कौर भोजन भर मेरी आकांक्षा है। मैं आपके द्वार पर कब से गिड़गिड़ा रहा हूँ। मेरा कोई अन्य आश्रय नहीं है जहाँ मैं भिक्षा माँग सकूँ। मैं अन्यत्र जाकर नहीं माँग सकता। मुझे तो आप ही से भिक्षा चाहिए। इस पद में कवि का अभिप्राय यह बताना है कि मैं आपका एक निष्ठ भक्त हूँ। मैं किसी अन्य देवी देवताओं से याचना करने वाला नहीं हूँ।

कठिन कलियुग ने बड़ा कष्टमय समय ला दिया है। मैं दारुण दुःख सह रहा हूँ। इस कलियुग ने मुझे दुर्गतिग्रस्त करने का संकल्प ले लिया है। एक तो कलियुग की पीड़ा ऊपर से मैं अधम कोटि का मनुष्य हूँ। परन्तु मेरा मन साफ है और ऊँचा भी है। मुझसे किसी ने बताया है कि प्रभु श्रीराम ही आपकी समस्या का हल निकाल सकते हैं। दीन-हीन की भावना श्रेष्ठ होना कोढ़ में खाज की तरह है अर्थात ज्यादा दुखदाई है। मेरा हृदय भय से हहरता रहता है। आपको पाने के लिए सत्संगति करता हूँ।

शेष आगे-

उत्तर।- वर्तमान संसार ने इस अनन्त शक्ति को निराधार कल्पना कहकर टाल देने का परिणाम बहुत घातक हुआ है। इसका भीषण दुष्परिणाम यह हुआ है कि संसार के कोने-कोने में युद्ध, दमन, अत्याचार, बलात्कार इत्यादि का नग्न नृत्य हो रहा है। कवि ने मनुष्य को इस भूल के प्रति सावधान होने के लिए कहा है।

डॉ० देव चरण प्रसाद 22।09।20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०ऊ० सं० महावि० खुरखसेना, पूर्णियाँ।